

कानपुर | बृहस्पतिवार • 24.04.2025

अमरउजाला 05

गुरुकुल प्रणाली को आधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ा जाए

मर्चेंट्स चैंबर ऑफ उप्र की ओर से गुरुकुल शिक्षा पर हुई गोष्ठी में बोले वक्ता

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। मर्चेंट्स चैंबर ऑफ उत्तर प्रदेश की ओर से बुधवार को चैंबर हाल में गुरुकुल शिक्षा, प्राचीन ज्ञान, आधुनिक विज्ञान और तकनीकी विकास विषय पर गोष्ठी हुई। इसमें वक्ताओं ने गुरुकुल प्रणाली को आधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ने पर बल दिया।

मुख्य वक्ता, इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिक स्टडीज, गुजरात यूनिवर्सिटी के सहायक प्राध्यापक आचार्य (डॉ.) दीपक कोइराला ने कहा कि प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में न केवल ज्ञान का संचरण होता था, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, नैतिकता, अनुशासन और समग्र जीवन दृष्टि का विकास भी होता था। यदि इस प्रणाली को आधुनिक विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के साथ जोड़ा



गोष्ठी में (बाएं से) अवध बिहारी मिश्रा, आचार्य दीपक, डॉ. श्याम बाबू व अन्य। संवाद

जाए तो भारत की शिक्षा प्रणाली दुनिया को एक नई दिशा दिखा सकती है।

उन्होंने कहा कि गुरुकुल प्रणाली को आधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ना एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है। इससे एक ऐसी पीढ़ी तैयार होगी जो ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति और मानवता में संतुलन स्थापित कर सके।

गुरुकुल में शिक्षित बच्चे नौकरी मांगने के स्थान पर स्व-रोजगार, उद्यमिता, अनुसंधान पूरक जीवन शैली अपनाएंगे। इससे पहले उन्होंने संस्कृत में श्लोक के साथ अपने संबोधन को शुरूआत की। सुश्री जैन, डॉ. श्याम बाबू गुप्ता, अवध बिहारी मिश्र, मुकुल टंडन, अतुल कानोडिया, महेंद्र मोदी, अंगद सिंह, छवि जैन आदि मौजूद रहे।

॥ दैनिक जागरण कानपुर, गुरुवार, 24 अप्रैल, 2025

वैदिक सनातन का अभिन्न अंग जैन धर्म, शोध की संभावनाएं

जागरण संवाददाता, कानपुर : जैन धर्म वैदिक सनातन धर्म का अभिन्न अंग है, दोनों धर्म एक दूसरे के पूरक हैं। प्राकृत भाषा संस्कृत की तरह प्राचीन भाषा है और इसका साहित्य बहुत समृद्ध है। वर्तमान समय में इसमें शोध की बहुत संभावनाएं हैं। ये बातें सीएसजेएमयू के प्रति कुलपति प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी ने कहीं। वह बुधवार को विश्वविद्यालय के स्कूल आफ लैंग्वेज में स्थापित जैन शोध पीठ के द्वारा प्राकृत भाषा का पुनर्जीवन, संवर्धन एवं शोध विषय पर संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि निश्चित रूप से हमारा विश्वविद्यालय आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ के माध्यम से प्राकृत भाषा के पुनर्जीवन एवं उसके संवर्धन में सहयोग करेगा। विश्वविद्यालय में जैन आगम संवर्धन के लिए एक प्रथक पुस्तकालय शुरू करने की जरूरत है।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि एवं प्रधान वक्ता साबरमती गुरुकुल अहमदाबाद से आए डॉ. दीपक

● सीएसजेएमयू के स्कूल आफ लैंग्वेज में स्थापित जैन शोध पीठ की ओर से की गई संगोष्ठी

● विश्वविद्यालय में जैन आगम संवर्धन के लिए एक प्रथक पुस्तकालय शुरू करने पर जोर



सीएसजेएमयू के स्कूल आफ लैंग्वेज में जैन शोध पीठ द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्रति कुलपति प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी को प्रतिष्ठा भेंट करते स्टफ सदस्य ● सीएसजेएमयू कोइराला ने बताया कि प्राकृत भाषा प्राचीन भाषा है। इसमें सदाचार, अहिंसा के नैतिक मूल्यों का भंडार है। भगवान महावीर एवं भगवान बुद्ध ने शांति एवं जन-कल्याण के लिए प्राकृत (पाली) भाषा में अपने उपदेश दिए। इन प्राच्य विद्याओं का संरक्षण एवं संवर्धन गुरुकुल-शिक्षण-प्रणाली द्वारा किया जा सकता है। इस प्रणाली द्वारा छात्र

गुरुकुल प्रणाली में होता था व्यक्तित्व निर्माण

जास, कानपुर : प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में ज्ञान मिलने के साथ व्यक्तित्व निर्माण, नैतिकता, अनुशासन और समग्र जीवन दृष्टि का विकास होता था। यह बात बुधवार को गुजरात विश्वविद्यालय की इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिक स्टडीज के सहायक प्राध्यापक डॉ. दीपक कोइराला ने कही। वह मर्चेंट्स चैंबर सभागार में मर्चेंट्स चैंबर द्वारा गुरुकुल शिक्षा : प्राचीन ज्ञान, आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी विकास विषय पर आयोजित गोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यदि इस प्रणाली को आधुनिक विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के साथ जोड़ा जाए तो देश की शिक्षा प्रणाली दुनिया को एक नई दिशा दिखा सकती है। सीएसजेएमयू जैन, डॉ. श्याम बाबू गुप्ता, अवध बिहारी मिश्र, मुकुल टंडन, अतुल कानोडिया, महेंद्र मोदी आदि लोग मौजूद रहे।

कानपुर

आज

गुरुवार 24 अप्रैल, 2025

गुरुकुल प्रणाली को आधुनिक तकनीकी से जोड़ना क्रांतिकारी कदम होगा

□ प्राचीन ज्ञान, आधुनिक विज्ञान और तकनीकी विकास पर गोष्ठी आयोजित



विचार गोष्ठी में मौजूद वक्ता।

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 23 अप्रैल। मर्चेंट्स चैंबर ऑफ उत्तर प्रदेश, कानपुर के तत्वावधान में बुधवार को विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका विषय था 'गुरुकुल शिक्षा : प्राचीन ज्ञान, आधुनिक विज्ञान और तकनीकी विकास'। इस अवसर पर प्रमुख वक्ता इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिक स्टडीज, गुजरात यूनिवर्सिटी के सहायक प्राध्यापक आचार्य डॉ. दीपक कोइराला ने कहा कि प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में

न केवल ज्ञान का संचरण होता था बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, नैतिकता, अनुशासन और समय जीवन दृष्टि का विकास भी होता था। यदि इस प्रणाली को आधुनिक विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के साथ जोड़ा जाये तो भारत की शिक्षा प्रणाली दुनिया को एक नई दिशा दिखा सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि गुरुकुल प्रणाली को आधुनिक तकनीकी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ना एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है, जिससे एक ऐसी पीढ़ी तैयार होगी जो ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति और मानवता में संतुलन स्थापित कर सके। आचार्य दीपक कोइराला ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि गुरुकुल में शिक्षित बच्चे नौकरी मांगने के स्थान पर स्वरोजगार, उद्यमिता, अनुसंधान पूरक जीवनशैली अपनाएंगे। गोष्ठी का संचालन सुश्री जैन ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ. श्याम बाबू गुप्ता, अवध बिहारी मिश्रा, मुकुल टंडन, अतुल कानोडिया, महेंद्र मोदी और बड़ी संख्या में शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों, समाजसेवियों व पत्रकारों की उपस्थिति रही।

अमृत विचार

www.amritvichar.com

कानपुर, गुरुवार, 24 अप्रैल 2025

13



गुरुकुल शिक्षा पर आयोजित गोष्ठी में मौजूद वक्ता।

अमृत विचार

गुरुकुल शिक्षा आज के दौर में भी प्रासंगिक

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। मर्चेंट चैंबर ऑफ उत्तर प्रदेश कानपुर की ओर से बुधवार को विचार गोष्ठी आयोजित हुई। इस दौरान 'गुरुकुल शिक्षा : प्राचीन ज्ञान, आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी विकास' विषय पर विशेषज्ञों ने राय रखी। वक्ताओं ने गुरुकुल शिक्षा को आज भी प्रासंगिक बताया।

गोष्ठी में प्रमुख वक्ता के रूप में आचार्य (डॉ.) दीपक कोइराला ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि गुरुकुल में शिक्षित बच्चे नौकरी मांगने के स्थान पर स्व-रोजगार, उद्यमिता, अनुसंधान पूरक जीवनशैली अपनाएंगे। सुश्री जैन डॉ. श्याम बाबू गुप्ता, अवध बिहारी मिश्र, मुकुल टंडन, अतुल कानोडिया, महेंद्र मोदी, सविध सहित प्राध्यापक मौजूद रहे।